ॐ जय जगदीश हरे

-श्री हरी आरती पर टीका

टीकाकार : साईं जी का नारद मुनि(एक साईं भक्त)

^Jay sai ram^

प्रणाम।

सभी साईं भक्तो को और हरी प्रेमियों को मेरा सादर प्रणाम

श्री हरी की आरती हम सभी गाते हैं बड़े भाव से परन्तु जो आरती हम रोज गाते हैं उसमे भी भक्ति रस छिपा हो सकता हैं इतना हमारे ध्यान में कभी कभी नही आ पाता,मेने कुछ ऐसे ही ज्ञान के मोती अपने गुरुदेव साईं बाबा की कृपा से , श्री हरी की आरती में ढूँढने की कोशिश की हैं आपके सुझाव और विचारो का स्वागत हैं

ज्ञानवृद्ध और भक्त जन मेरी त्रुटियों को क्षमा करें और उनपर प्रकाश डालने की कृपा करे।।।

-साईं जी का नारद मुनि

गुरुदेव साईं सरकार की जय

सभी संतो की जय

श्री हरी की जय

ॐ जय जगदीश हरे

हे जगत के ईश्वर हरी आपकी जय हो हे जगत का पालन करने वाले माया के कलेश हरने वाले हरी आपकी जय हो हे ओंकार स्वरुप

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।

हे स्वामी ! आपके दास अपने प्राणनाथ स्वामी की आरती उतारते हैं,आपकी जय हो हे अजित!!!

भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे॥ ॐ जय जगदीश...

जिन भक्तो को केवल आपका आश्रय है ,हे वत्स चिह्न धारण करने वाले भक्तवत्सल प्रभु आप अपने उन भक्तो पर संकट आने पर दोड़े आते हैं, आत्माराम होते हुए भी भक्तो के भजन में विघ्न आते ही आपके हृदय में उनके लिय करुणा भर जाती हैं,आपके भक्त अंतर्मुख होकर सदेव हरी आपके उस आनन्द रस का पान करते हैं जो विषयी लोगो के लिय अत्यंत दुर्लभ हैं

जो ध्यावे फल पावे, दुःख बिनसे मन का।

सुख सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तन का॥ ॐ जय जगदीश...

जिन्हें कभी भूल से भी आपका विस्मरण नही होता,जिनके हृदय में हे श्री कान्त आप बसे हैं उनकी आपके चरणों में प्रीती और भक्ति निरंतर बढती ही जाती हैं, आपके ध्यान और चिंतन का इससे श्रेष्ठ और फल हो भी क्या सकता हैं नाथ, आपका ध्यान कर ही शंकर भगवान कर्पूर सम गौर हो गए और आप उनका चिन्तन मनन कर अत्यंत मनभावन श्यामवर्ण हुए हे श्रीनिवास

जिसका ध्यान आपके स्वरुप में स्थित हो गया फिर उसे संसार के क्षणिक दुखों का स्मरण भी नही रहता हे नाथ हे भरतार आप हमारा योगक्षेम वहन करे ताकि हमे इस शरीर के साधन में समय व्यर्थ न करना पड़े, हम सम्पत्ति प्राप्त करने में आयु नही गवाना चाहते हे समर्थ आप हमारे भंडार भरे की हम अर्थ से धर्म भी अर्जित कर सके,हमारा जीवन आपको समर्पित हो नाथ ये तन के कष्ट मिटाओ हरी यह पंचभोतिक देह भजन में व्यवधान न डाले इसिलिय इसका पोषण आप करे हे जगतपिता परमात्मा!!!

मात पिता तुम मेरे, शरण गहूं मैं किसकी।

तुम बिन और न दूजा, आस करूं मैं जिसकी॥ ॐ जय

जगदीश...

आप ही मेरे माता पिता हो हे प्राणनाथ हे परमात्मा ,आप अनंत हो ,नारायण !!!जब कोई नही था तब भी आप थे और जब कोई नही होगा तब भी केवल एक आप ही होंगे। अभी भी जो दिखाई दे रहा हैं वह समस्त जगत आपके उदर में समाया हुआ हैं, आप हमे माता का वात्सल्य और करुणा, और पिता का प्रेम दे ,हे जगतपिता! मै आपको छोड़ और किसकी शरण में जाऊ?इस जग में आस लगाने से केवल दुःख ही प्राप्त होता हैं, हमारी आस तो हमारे समर्थ श्री हरी आप में ही लगी हैं।

तुम पूरण परमात्मा, तुम अंतरयामी।

पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सब के स्वामी॥ ॐ जय जगदीश...

आप पूर्ण हैं प्रभो आप समस्त जीवो के अन्तः करण में वास कर सबके संकल्प विकल्प जानने वाले हैं,आप परम आत्मा हैं,आपमें मिलकर ही हम उस शाश्वत सुख और तृप्ति को प्राप्त सकते हैं जिसकी हमे अनंत जन्मो से खोज हैं क्यू की हे पूर्णकाम हरी ,आप ही पूर्ण हैं, वेद जिसे ब्रह्म कहता हैं वह परम ईश्वर आप हरी ही हो हे समस्त लोको के स्वामी सब आपमें

समाया हैं और आपकी माया के कारण ही प्रकाशित हो रहा हैं,यदि मै कहु की जो दिख रहा हैं इसका कारण माया हैं तो वह गलत होगा क्यू की माया तो स्वयं जड़ हैं,आप स्वयमप्रकाश ही इस जगत का कारण हैं।

तुम करुणा के सागर, तुम पालनकर्ता।
मैं सेवक तुम स्वामी, कृपा करो भर्ता॥ ॐ जय जगदीश...

करुणा का अर्थ मुझे आपके प्रेम स्नेह और वात्सल्य ने बतलाया हैं प्रभु, आप परम उदासीन होते हुए भी अपने रोम रोम में बसे करोडो ब्रह्मांडो का निर्माण पालन और विलय करते हो, परन्तु स्वयं उसमे आसक्त नही होते।

यद्पी आपकी सेवा करने का सामर्थ्य मुझमे नही तथापि नाथ मुझे अपना सेवक स्वीकार कीजिये हरे हे हरी हरी हरी हरी हरी हरी हरी।।। कृपा करो, स्वयं करुणा कर अपने चाकर का भरन पोषण करने वाले दीनवत्सल प्रभु ,आपकी जय हो जय हो.......

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति।
किस विधि मिलूं दयामय, तुमको मैं कुमति॥ ॐ जय जगदीश...

आपमें बिना श्रध्दा भक्ति रखे आपको समझा नही जा सकता,

कोई कहता हैं आप वेदांत से जाने जा सकते हैं, कोई योग तो कोई तप ही इसका उपाय बताते हैं तो किसी की निष्ठां स्वाध्याय में ही होती हैं परन्तु नाथ आपतक और आपके स्वरुप ज्ञान तक वही पहुंच पता हैं जिसे आप चाहें।

इसिलिय नाथ इस मूढमति पर भी कृपा कीजिये मेने कोई साधन भजन नही किया कभी ,न ही कभी वेदों का सही अर्थ समझा, मुझे आपतक का मार्ग भी नही ज्ञात हे नाथ कृपा करो कृपा करो दया करो

दीनबंधु दुखहर्ता, तुम रक्षक मेरे।

करुणा हाथ बढ़ाओ, द्वार पड़ा तेरे॥ ॐ जय जगदीश...

हम दीनो के आप ही एकमात्र रिश्ते नाते हैं,हमारे दुःख हरने वाले हरे रक्षा करो इस भवसागर में अनंत काल से हम बंधन में हैं क्या आपको हमारी यह दयनीय स्थिति देख करुणा नही आती??? मुझे विश्वास हैं आपकी करुणा पर हे करुणानिधान हे चतुर्भुज मुझे इस भव बंधन से मुक्त करें।।।

विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।

श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा॥ ॐ जय जगदीश...

हमारा मन अत्यंत चंचल हैं प्रभु ये विषयों में बार बार उलझ जाता हैं,इसे पाप स्वाभाविक प्रिय हैं,आप कृपा कर इस अत्यंत मलिन अन्तःकरन में विराजो नाथ इसके सरे मल क्षण में समाप्त हो जायेंगे हरी हरी हरी ऐसी श्रद्धा और हरी चरणों में गुरु चरणों में भक्ति दीजिये की इस देह से संतो की सेवा ही हो।

।।श्री हरी।।

जय साईं राम

श्री साईनाथ महाराज की जय।।।